

तत्व - प्रबोधिनी

लेखक

समर्थ गुरु परम् सन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

निवासी फतेहगढ़, प्रान्त फर्रुखाबाद

तत्व - प्रबोधिनी

लेखक

परमसन्त सद्गुरु श्री महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

प्रकाशक :-

श्री रामचन्द्र पब्लिकेशन लीग
फतेहगढ़ (यूपी)

द्वितीय
संस्करण

१९७१

मूल्य
७५ पैसा

निवासी फतेहगढ़, प्रान्त फर्रुखाबाद

मुद्रक :-

गंगा राम,

स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस,

४/१२१, नूनहाई - फरुखाबाद



पुस्तक मिलने का पता :-

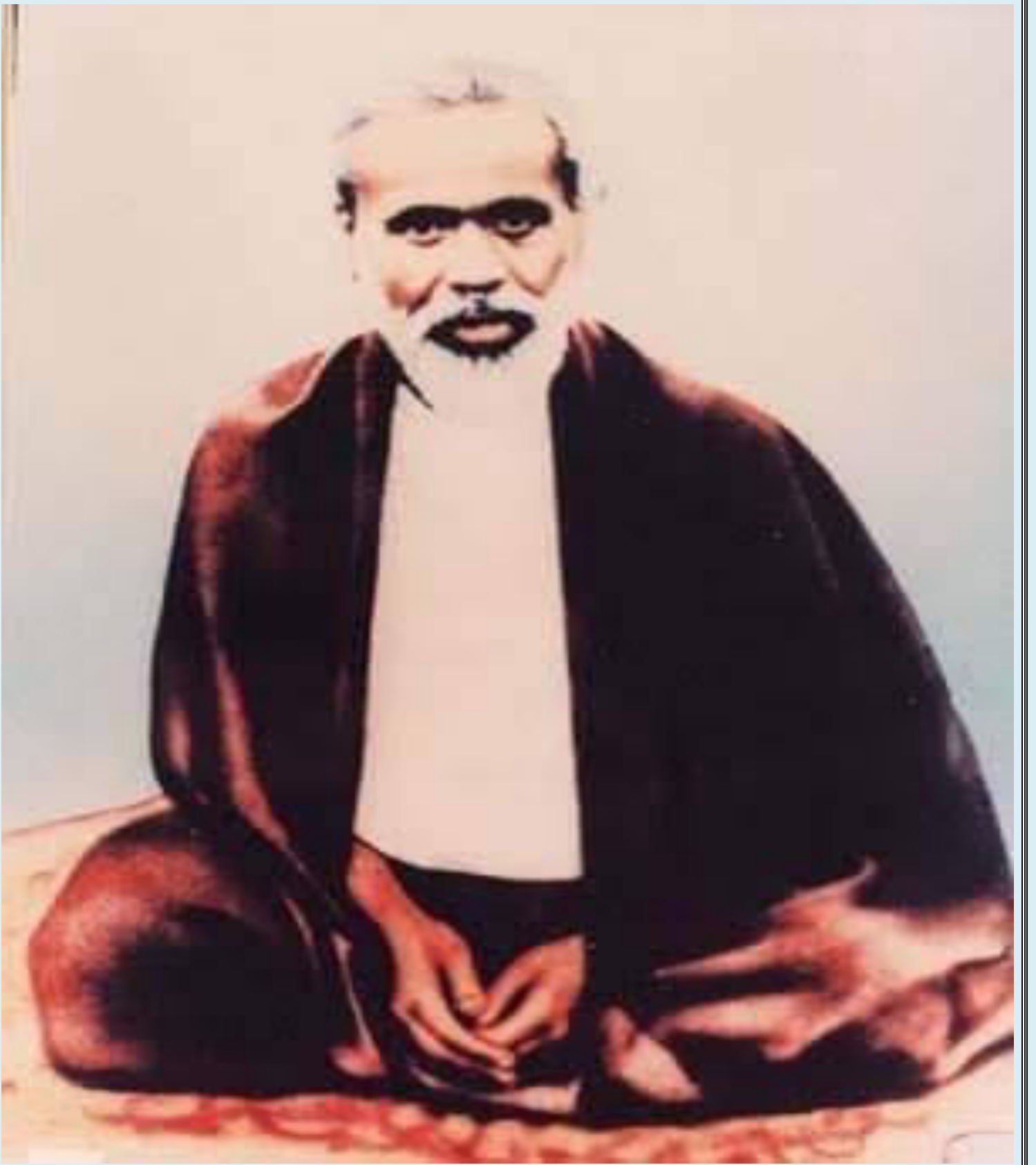
श्री अखिलेश कुमार

प्रेसिडेन्ट

श्री रामचंद्र पब्लिकेशन लीग ,

समाधि-मन्दिर-तलैया लेन

फतेहगढ़



समर्थ गुरु परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज , फतेहगढ़

विषय - सूची

विषय

१. प्राक्कथन
२. भूमिका
३. तत्व-प्रबोधिनी
४. इल्मलतायफ़
५. संयम और सद्गुरु
६. कसौटी
७. अविद्या का फल
८. चक्रविद्या और आत्मज्ञान

=====

समाधि मन्दिर



समाधि



१. पूज्य माता जी धर्मपत्नी समर्थगुरु परमसन्त महात्मा रामचंद्र जी

निर्वाण तिथि २९ मई १९५५ ।

२. समर्थगुरु परमसन्त महात्मा रामचंद्र जी महाराज, फतेहगढ़

निर्वाण तिथि १४ अगस्त १९३१ ।

३. महात्मा जगमोहन नारायण जी सुपुत्र समर्थगुरु परमसन्त महात्मा रामचंद्र जी

निर्वाण तिथि २८ अगस्त १९४४ ।



ॐ पवित्रं ते वितंत ब्रह्मणस्पते,

प्रभु गात्राणि पर्येषि विश्वतः

अतृप्त तनूरन तदामो अशनुते,

श्रुतास इद्वहन्तस्ततस्यमाशत !!

ऋग्वेद ९-८३-१

सामवेद प्र. ६-(२) ७ -१२

हे बृहत संसार के स्वामी, तुम्हारी पवित्रता की धारा सर्वत्र फैली हुई है और उसके साथ तुम मेरे रोम-रोम के चारों ओर व्याप्त हो रहे हो। परन्तु जो व्यक्ति अतपस्वी हैं -- कच्चे हैं वे इस पवित्र धारा का स्पर्श तक नहीं कर पाते और जो पक्के हैं, तपस्वी हैं वे इसे धारण करते हुए इसे अच्छी तरह प्राप्त कर लेते हैं ।

प्राक्कथन

परम सन्त शिरोमणि महात्मा रामचंद्र जी महाराज पूर्ण योगी और ब्रह्मवेत्ता ही नहीं थे। वरन पूर्ण सद्गुरु भी थे। योग की उच्चातिउच्च अवस्थाओं को प्राप्त करने के समस्त साधनों पर उनका पूर्ण अधिकार था। तत्वज्ञान के मार्ग के विभिन्न गली-कूचों से वे पूर्णतया परिचित थे। एक कुशल वैद्य की तरह वे अपने शिष्य को उसकी प्रकृति आदि के अनुकूल सीधे तथा सरल मार्ग पर लगा देते थे, जिससे वह उत्तरोत्तर उत्कृष्ट दशाओं को प्राप्त करता जाता था।

इतना ही नहीं, वे प्रभु के विशेष प्रतिभाशाली भक्त थे। गुप्त रहस्यों की सरल भाषा में विवेचना करने की उनमें अपूर्व क्षमता थी। परम् गुह्य विषयों का चित्र सा खींच कर रख देते थे। उनका वर्ण्य विषय आलोचना की सीमा से परे है, क्योंकि वह केवल अनुभव गम्य है। अनुभव हीन, कोरा आलोचक भटक कर अपना विनाश कर लेगा। विषय गम्भीर है अतएव अच्छी तरह समझने के लिए कई बार पढ़ने की आवश्यकता है।

उनका दार्शनिक ज्ञान केवल हिन्दू फिलॉसफी तक ही सिमित नहीं था। वे मुस्लिम फिलॉसफी के भी प्रकाण्ड पण्डित थे। उनके ग्रंथों में दोनों का अपूर्व समन्वय है। ब्रह्मविद्या के विभिन्न रत्नों को किसने कैसे सजाया है इसकी झाँकी दिखाने का श्रेय श्री महात्मा जी को प्राप्त है।

परधर्मावलम्बी महात्माओं का जिस आदर के साथ उन्होंने स्मरण किया है, वह उन्हीं के अनुरूप है। मुसलमान संतों द्वारा किये गए अनुसंधानों व संशोधनों पर उन्होंने स्वयं अनुभव किया और उनको अपनाया और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। संतों का हृदय ऐसा ही उदार और विशाल होता है। ठीक भी है, ब्रह्मविद्या किसी जाति विशेष की बपौती नहीं है।

प्रस्तुत पुस्तक महात्मा जी की रचनाओं में से एक का कुछ अंश है। हमारी समझ में महात्मा जी की चक्र-विद्या विषयक रचनाओं के लिए यह एक प्रकार की भूमिका है। इसी कारण सबसे पहले इसका ही प्रकाशन योग्य समझा। इसको पढ़कर ब्रह्म-विद्या की ओर रुचि होगी।

हमने इसे महात्मा जी की मूल हस्तलिखित उर्दू लिपि से जैसे का तैसा हिंदी लिपि में छपवा दिया है। अनुवाद कितना ही सुन्दर क्यों न हो, परन्तु फिर भी मूल आशय से हट जाने का भय होता है। कठिन शब्दों के अर्थ अपनी योग्यतानुसार कोष्टक में दिए गए हैं। इससे हिंदी जानने वालों को सुविधा होगी।

महात्मा जी की रचनाओं का प्रकाशित होना कितना उपयोगी तथा लाभप्रद है। यह आप स्वयं समझ लें। कृपा करके इस विषय में आप अपनी सम्मति ओर योजना भेजें। यदि हमें आपसे प्रोत्साहन मिला तो हम अन्य रत्न भी आपके सम्मुख रखेंगे।

समाधि मन्दिर ,
फतेहगढ़
कार्तिक पूर्णिमा १९९७

जगमोहननारायण
प्रेसिडेन्ट
श्री रामचंद्र पब्लिकेशन लीग

भूमिका

परमपिता जी ! यह सेवक जैसा है, तैसा आपकी शरण में मौजूद है । इसको खबर नहीं कि आपके गुण कैसे गाये जायें । हाँ, कभी-कभी अपनी बाखबरी पर नाज़ होता है, लेकिन दर-हकीकत जब काम का वक्त आता है तो यह सब धरे का धरा ही रह जाता है । अब तक छानबीन करने का यह नतीज़ा निकला और यह जान पाया कि कुछ नहीं जाना। दुनियाँ के हर हिस्से में इल्म का शोर मचा हुआ है । करोड़ों, लाखों किताबें कुतुबखानों में भरी पड़ी हैं । हज़ारों की तादाद में अखबार और रिसाले हर मुल्क के कोनों से रोज़ाना, हफ्तेबार, महाबारी निकल रहे हैं । हर ख़ास और आम की नज़रों में समा कर जुबानों पर चढ़ कर, ज़हनों में उतर जाते हैं । चन्द दिन हाफ़ज़े की कोठरियों में बंद रहकर फिर न मालूम कहाँ के कहाँ चले जाते हैं कि याद करने पर भी याद नहीं आते । और अगर याद भी आये तो बेसरपैर के, कि कुछ कारामद नहीं । यह सब कहाँ से आते और कहाँ ग़ायब हो जाते हैं ? क्या यह सब आपके नाम और रूप की गूँजें और नज़ारे (दृश्य) तो नहीं हैं जो आपके ज्ञान के समुन्द्र से लहरों की शकल में उठते और फिर मादूम (मन्द) हो जाते हैं ? ज्ञान, अज्ञान, प्रकाश, अंधकार, विद्या, अविद्या, जड़, चेतन, मौत, ज़िन्दगी, ताक़त, कमज़ोरी, वगैरा सब आप के और आपकी माया के खेल और तमाशे हैं । दुनियाँ एक तमाशागाह है । सब लोग ऐक्टर और आपस में एक दूसरे का खेल देखने वाले और नक़ल करने वाले हैं। कुछ लोग खेल रहे हैं, कुछ इन खेलों को देख रहे हैं और चन्द लोग इन खेले हुए खेलों की नक़ल उतारने में बदमस्त हैं। बहुत सी तादाद इन नक़ली खेलों को देख-देख कर ऐसी मस्त और महव है कि इनके आनन्द का ठिकाना नहीं । यह चक्र ऐसा घूम रहा है कि न मालूम कब खत्म होने पर आएगा। मुमकिन है कि क़यामत कुबरा (महाप्रलय) जिसका नाम है, वह इस चक्र की आखिरी हरकत या ठहराव के दिन का नाम हो ।

जो इस जहान से चले गए और मुक्त पुरुष अपना-अपना खेल दिखलाकर और थकथका कर एक कोने में बैठ रहे और ऐसे ख़ामोश छिप कर बैठे कि फिर लौट कर खबर तक न दी । ऐसे गुमनाम हुए कि किसी का नामोनिशान तक बाकी नहीं । क्या हुआ कि अँगुलियों पर गिने

गिनाये महापुरुष, ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर, अवतार, औलिया, अपने-अपने कारनामों हिदायतों के नाम और रूप में अब तक याद करने वालों को अपनी झलक दिखला देते हैं। यह छाया रूपी नाम और रूप जब तक कि ज्ञाती प्रकाश बाकी है कायम रहेगा। यह छाया तो छाया ही है, नक़ल की हैसियत कितनी? यह मौजूदा हस्ती किसी अपनी पहली हस्ती की नक़ल ज़रूर है। अगर कोई शख्स इस सिलसिले को लेकर इस तरह चले कि अपने आपको नक़ल या छाया अपने पिता की मान ले और पिता को अपने दादा की छाया। और इसी तरह पीछे की तरफ सरकता हुआ चला जाये, यहाँ तक कि इसको आखिरकार नक़ल या छाया का सिलसिला बन्द मालूम होने लगे और आधार महज़ के सिवाय कुछ समझाई न दे तो इस जुरात के मुक़ाम को मुमकिन है कि आपकी ज्ञात बाबरकात के कदमों के रखने की जगह का नाम दिया जा सके।

हे परमात्मन ! यह बन्दा भी ऐसी मौजूदात की कितनी नक़लों की नक़ल और असलियत के किसी मुक़ाम के असल की छाया और ज्ञात की सिफ़तों का मजमुआ होकर आपके मुकर्रर किये हुए नियमों के अनुसार पार्ट अदा कर रहा है। आप सबके हृदय की जानते हैं, इसलिए आप ही पर छोड़ता हूँ कि आप खुद फैसला करें कि सेवक का खेल कितना असली है और कितना नक़ली और नक़ली है तो हस्ती की किस असल की नक़ल है। मुझको दृढ़ विश्वास है कि आपकी दया और कृपा की लहरों और मौज़ों ने आपसे दूर पड़े हुए शरीर को चरों तरफ़ से इस दुनियाँ में पहले ही दिन से ढांप रक्खा था। और सबसे पहले हिदायत की रौशनी मुझ पर मेरी परम भक्त माता की पवित्र गोद में डाली गयी। इस नूर (प्रकाश) की हरारत ने सात वर्ष तक पाला पोषा।

हे परम दयालु ! आपके रहम ने मुझको बहुत दिन तक बेहिदायत नहीं छोड़ा। बल्कि उम्र के उन्नीसवें साल के एक मुबारिक दिन पर मेरे सर्वस्व को हमेशा के लिए एक मुजस्सिम (मूर्तिमान) रहम, हादीय व तरीक़त (पंथ को दिखाने वाले) और शमयमार्फ़त व हकीक़त (ज्ञान और विज्ञान के दीपक) के सुपर्द कर दिया। इस सच्चे रास्ता बतलाने वाले ने पहले ही दिन मेरे कान में फूंक दिया कि तेरी हस्ती असलियत की तरफ़ पहले से ही मायल है। इसलिए तू अपने आपको यानी असल को असल करके दिखला। नक़ल कर तो असल की। नक़ल की नक़ल इस तरह कर की नक़ल या छाया को औज़ार बना। स्वॉग रचने में माया की मदद ले और सहारा महज़ ज्ञात मुतलक (सत्य पद) का ले।

मेरे रहनुमा ने ऐसा इशारा देकर मुझको महज़ मेरे ऊपर ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि खुद छाया की तरह हर वक्त मेरे साथ रहकर सोलह साल तक अपनी खास तवज्जह ज़ाहिरी और बातनी (अन्दरूनी) से मेरी निगहदाशत फ़रमाई । तरीक़त (पंथ) के बाहरी आडम्बरों से अलहदा रहने के लिए हमेशा हिदायत फ़रमाई और आखिरकार अपने रङ्ग में रङ्ग रँगाकर यह हुक्म फ़रमाया कि हमारा मिशन जिस तरह और जहाँ तक हो सके दुनियाँ के लोगों तक पहुँचा दें। आपका मंशा यह था कि गिरे हुए जीवों और भूले भटके हुए दुखी संसारियों को उभारा जाय और उनकी हालत को सम्हाला जाय। आपका असली मक़सद यह था कि जब तक लोगों की असली हालत न सम्हलेगी और उनकी भीतरी ताक़तों (आत्म शक्तियों) का उभार होकर वह जाग न जाएँगी और मन की ताक़त का अज़-सरे -नौ नशोनुमा न होगा और न फूलें फलेंगे , बुद्धी की सफ़ाई होकर तेज़ी न होगी, उस वक्त तक ख़ाली पूजा-पाठ और ऊपरी उपासना से खातिर ख़्वाह काम न चलेगा और बंधे हुए जीव वैसे ही रहेंगे। इसलिए आपने सिर्फ़ इस बात पर ज़ोर दिया क जहाँ तक बन सके अन्दर का अभ्यास किया कराया जाये और इसी के साथ-साथ धर्म सम्बन्धी उसूलों, सिद्धांतों की पाबन्दियों से यम -नियम जायज़ और नाजायज़ तरीकों और अमलों पर ख़्याल रखकर इनके अखलाक़ को सुधारा जाय। मुताला और स्वाध्याय से भी मौक़ा व मौक़ा फ़ायदा उठाया जाय। अहले बातिन (अन्दर का अभ्यास करने वालों) का सत्संग हमेशा किया कराया जाय तो ज़ाहिरी और बातनी तरक़की मुमकिन है। इसके सिवा अगर दुनियाँ के साम्प्रदाइयों, पन्थाइयों (अहले तरीक़त) की रीस (नक़ल) उतारी जायगी और अमल करेंगे तो महज़ तितली बन कर किताबों, पुराने बुज़ुर्गों के हालात सुनसुनाकर अपने दिल की इतमीनान हासिल कर लेते हैं और किसी तरह का अंदरूनी शग़ल नहीं करते, और उनका सत्संग थोड़ी देर किताबों का पाठ करना और भजन या कीर्तन करके शब्दों को गाकर अपनी तबियत बहला लेना है, तो फिर जिसका नाम असली मक़सद तक पहुँचना है वह कोसों दूर हो जायेगा ।

अब हमारे प्रेमी भाई थोड़ी देर इसको गौर करेंगे और सोचेंगे कि इस हुक्म का मंशा कि हद तक उनको पहुंचाया गया है और महात्मा के मिशन के उसूलों की पाबंदी और तामील में किस दरज़ा ख़्याल रखा जाता है। यही वजह है कि हमारे प्रेमियों का शुमार और नम्बर कितनी थोड़ी तादाद में है । दुनिया के लोग चाटक-नाटक ऊपरी खेल तमाशों और माया की

झलक के भूखे हैं। उनके लिए खाली-खाली भीतरी अभ्यास एक भारी बोझ है। अपनी पुरानी आदतों को तब्दील करके धर्म सम्बन्धी अखलाकों पर जाना कैसा बोझिल काम हो गया है कि एक कदम उठाना मुश्किल है। गिरते हैं, पड़ते हैं, भागने और मुँह छिपाने की कोशिश करते हैं। कितने भाग गए और न जाने कौन-कौन भागने को तैयार हो रहे हैं। फिर भी यह थोड़ी सी तादाद जो अब तक कायम नज़र आती है किस क़दर शानदार और वज़नी है इनका मुकाबला दूसर जमात के मेम्बरों से वही कर सकते हैं जो अहले नज़र हैं या जो साहब कि इस मार्ग और इस तरीकेकी सोहबत (सत्संग) उठाये हुए हैं। क्या वजह हैं कि इतनी बड़ी मुद्त में भी यह जमात कोई नुमायां और नामवर जमात कि शकल न बना सकी। न इसका कोई ज़ाहरा वजूद है। न कोई इमारत है, न कोई तहरीरी उसूल हैं, न कोई फण्ड है, न माली तहरीक है। वज़ह तो साफ़ ज़ाहिर है कि इब्तिदाई उसूल और मिशन की मंशा के खिलाफ़ किसी तरह जहाँ तक हो सका है अमलदरामद करने की जुरात (हिम्मत) नहीं की गयी है। लेकिन अब हमारे प्रेमियों और मेम्बरों में से ज़्यादा साहबान की यह तहरीक हुई है और होती रहती है कि माया के स्थूल रूप कि झलक भी इस तालीम और सत्संग के साथ शामिल कर दी जाय। यानी जुबानी हिदायतों को तहरीर का जामा पहना दिया जाय, या किताब और रिसाले की शकल अख्त्यार कराई जाय।

सेवक का ख़याल अब तक यह था और अब भी है की प्राचीन और ऋषिकृत ग्रन्थ, संत महात्माओं के मुशाहदात (अनुभव) की बानियाँ, उपनिषद, गीता, रामायण, रामचरित मानस, और संत कबीर साहब की शब्दसाखी और रमैनिया, गुरु नानक साहब का ग्रन्थ, हाथरस वाले संत तुलसी साहब की घट रामायण शब्दावली, परमसन्त राय सालिग्राम साहब के पत्र और कुल्लियात, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ, स्वामी विवेकानंद जी और स्वामी रामतीर्थ जी के मजमूए लेक्चर और स्पीचें, बनारस के स्वामी महाराज की अंग्रेजी किताब जिसका तरजुमा हाल में जनाब साहब जी महाराज आगरा ने हिंदी में कर दिया है, बहुत काफ़ी हैं और अगर किसी साहब को बवजह कम इल्मी के इन किताबों को देखने में दिक्कत होती है या परिभाषा से वाक़फ़ियत नहीं है या इनमें इशारों के होने की वजह से ज़हन गवाही नहीं देता तो महात्मा शिवव्रतलाल साहब ने दया करके अपनी प्रवाह धारा तहरीरों में इस कमी को पूरा कर दिया है। आपने ज़माना हाल की तहज़ीब और मौज़ूदा तर्ज़ तहरीर के पहलुओं को

ज़ेर नज़र रखते हुए आमफ़हम इबारत और महावरों का इस्तेमाल किया है । कुल पन्थों और सम्प्रदायों के अंदरूनी इशारात को जो अब तक सीना-बसीना चले आते हैं, खोल-खोल कर निहायत साफ़ लफ़्ज़ों में सबके रूबरू पेश कर दिया है और मज़हबों की गुत्थियाँ सुलझाने की इन्तहाई कोशिश की है । अगर इन तहरीरात के सिलसिले को वग़ौर और लगातार मुताला किया जाय तो मामूली पढ़े हुए लोग भी फ़ायदा उठा सकते हैं। इशारात और तालीमात का लुब्बुबाब तो दरअसल ज्यों का त्यों सत्संग में जुबानी तौर समझाने से यह ज़हनों के अन्दर आ सकता है, लेकिन ताहम इस किस्म की तहरीरात एक हद तक सतही इमदाद (ऊपरी मदद) और तस्सली के लिए बहुत मुनासिब हैं। जब ऐसे-ऐसे सामान मौजूद हैं तो फिर क्यों इस क़दर हविस पीछे पड़ी हुई है जो दिन दुगनी और रात सबाई बढ़ती चली जाती है। इसका सबब ज़ाहिर है। अब्बल तो इन्सान कुदरतन मालूम करने की तलाश में रहता है, इसके बाद उसको जदीद बातों और नए तरज़ों की दरयाफ़्त करने की ख़्वाहिश रहती है। एक मरतबा देखकर दूसरी दफ़ा दोहराने के लिए उनको दिलचस्पी बाक़ी नहीं रहती, हालाँकि वह मुताला की हुई बातों को कुछ न समझ सके हों ।

बड़ी वजह किताबों में दिलचस्पी न होने की यह होती है की ज़्यादातर ख़यालात और मज़ामीन दूसरे मुसन्निको से उधार लिए होते हैं और निज अनुभव न होने की वजह से दिल को नहीं लगते, क्योंकि अगर जुवान और कलाम में अगर जान न हो या मुसन्निक के क़ौल और फ़ेल में इक़्सानीयत न हो तो जो ख़यालात लफ़्ज़ों और जुमलों की बन्दिश में लाये जाते हैं बिलकुल भद्दे और बेअसर होते हैं। अनुभव का भी होना ग़ैर अखित्यारी है, इसलिए कलाम में हर वक्त एक सी तासीर नहीं होती। कभी तो एक कलाम निहायत पुरअसर होता है जो दिल को लगता है और दूसरे वक्त वही कलाम ग़ैरमुअस्सर और मोहमिल मालूम होता है। गरज़ कि किसी ख़याल को ज़ाहिर करने के लिए जो इबारत लिखने में आती है वह उसी वक्त पढ़ने वाले के ज़हन में उतरेगी जबकि ख़याल में प्रेम और मोहब्बत की झलक हो । इन सब बातों के अलावा अगर लिखने वाले की शोहरत उसके इल्म और अमल के लिहाज़ से बावक्त न ख़याल की जाती हो तो यह जुमला सबब ऐसे है कि मज़मून लिखने की जुरात नहीं करना चाहिए। लेकिन क्या किया जावे कि बाज़ वक्त ऐसी मजबूरियाँ सामने आ जाती हैं कि ख़वामख़्वाह जान-बूझकर भी क़लम उठाना ही पड़ता है। चुनाव इस सेवक के हमजलसा (सत्संगी) साहबान

ने कई मरतबा यह तहरीक की कि कुछ न कुछ लिखना ज़रूर चाहिए। उनकी ख्वाहिश यह है कि जो बातें और गुफ्तगू सत्संग के वक्त की जाती हैं वह सिलसिले के साथ दिमाग में मजफूज़ नहीं रहतीं और न सब लोग हाज़िर होते हैं। इसलिए ग़ैर हाज़िर लोगों के पास तक भी वह ख्यालात जाना चाहिए ।

पस मैंने यह इरादा कर लिया है कि जो कुछ हो सकेगा लिखूंगा। मुझे यह मालूम है कि मैं जुवानदा नहीं हूँ और न ही मज़ामीन लिखने पर कादिर (निपुण) हूँ। इसलिए बहुत मुमकिन है कि मज़ामीन बेरब्त हो जायें। अनमिल बेजोड़ होने का नुक्स भी उनमें होगा क्योंकि हर काम में मन्शा नफ़्स को खुश करना नहीं है और न कोई गरज़ शोहरत की है बल्कि महज़ यह खयाल मद्देनज़र है कि अवाम को किसी किस्म का फ़ायदा पहुंचे ।

पस उम्मीद है कि अहबाब मेरे प्रेम भरे हुए ज़ज़बात को जब उनके पास पहुंचें तो उनको अदम तवज्जही से ठुकरा न दें बल्कि अपने दिल में जगह देने की कोशिश करें ।

दुआ का तालिब :-

फ़कीर रामचन्द्र

तत्व - प्रबोधिनी

इल्मलतायफ़ एक ऐसी अज़ीम मोज़ान है कि खुदाताला ने मुताख़िरोन सूफ़िया को अता फ़रमाई
है।

(चक्रों का ज्ञान वह उत्कृष्ट कसौटी है जिसे परमात्मा ने आधुनिक सन्तों को प्रदान किया है।)

इल्म लताइफ (चक्र विज्ञान)

लतायफ लतीफों की जमा है और महात्माओं और पहुँचे हुए बुजुर्गों ने जिस्म के अन्दर जो खास-खास जगहें उस आत्मसत्ता या आत्मा के ठहरने की हैं उनको उन्होंने योग की अन्दरूनी आँखों से दरयाफ़्त किया है और खूब तहकीकात करके यह मालूम किया है कि किन-किन मुकामों में सुरत या रूह की बैठक है और फलां मुकाम पर और हर एक मुकाम पर आत्मा के या सुरत के बैठने से क्या गरज़ है और क्या प्रयोजन है और यह भी मालूम किया कि कौन-कौन से अनासिर लतीफ़ और कसीफ़ वहाँ पर जमा हैं, यानी कौन-कौन सूक्ष्म और स्थूल तत्व या मसाले वहाँ मौजूद हैं और किस तत्व का खास तौर पर वहाँ जोर है और क्यों है और इन मसालों को कौन-कौन इस्तेमाल करने वाली ताक़तों और शक्तियों की निगरानी करने को कौन-कौन मुवक्किल (अधिष्ठाता) या देवता और फ़रिश्ते वहाँ पर मुकर्रर किये गए हैं। तत्वों (अनासिर) का रंग और रूप क्या है, उनका वहाँ पर क्या असर है, उस मुकाम का नाम क्या है और फिर उस जगह की आवाज़ और शब्द किस तासीर का है? इसका मुफ़स्सिल बयान अपने मौके पर किसी जगह किया जायगा ।

ऐसे मुकाम और जगहें इस पिण्डशरीर (आलमे सगीर) में बे तादाद हैं जो महात्माओं ने अपनी तहकीकात और छान-बीन में दरयाफ़्त की हैं। मगर मुख्य-मुख्य और खास-खास ज़रूरी मुकामात का ज़िक्र किया है और उनकी तफ़सील बयान की है। इन मुकामों और जगहों का नाम अपने-अपने असर और तासीर और काम के लिहाज़ से अलहदा अलहदा रख दिए हैं। हिन्दुस्तान के महात्माओं ने इनको चक्र, पद्म, कमल, दल, मण्डल कहा है और मुसलमान बुजुर्गों ने इनको लतीफ़ा या मुकाम का नाम दिया है ।

इन लतीफ़ों का इल्म (इन कमलों और चक्रों का पूरा ज्ञान) एक निहायत मुस्तनिद और सिद्ध की हुई तराजू और कसौटी है जिससे कि ब्रह्म-विद्या (इल्म-इलाही) की वाक़फ़ियत और समझ-बूझ, तोल-नाप बखूबी हो जाती है ।

हर एक मुल्क के महात्माओं और बुजुर्गों ने, जिन्होंने कि इसको पहले-पहले तहकीकात करके रिवाज़ दिया है, इस इल्म की मुकम्मिल तहकीकात अमली तो कर ली, मगर या तो रिवाज़ उस वक्त ऐसा नहीं था कि मुफ़स्सिल तौर पर इनके रंग, रूप, नाम, आवाज़ और तासीरों के बाबत गुफ़्तगू करते कराते या अपने बाद के शागिर्दों के वास्ते कागज़ और किताबों में कुछ लिखा हुआ छोड़ जाते या किसी खास मसलहत से लफ़्ज़ों के साथ इसके मुतल्लिक कुछ बहस नहीं की, बल्कि सामने-आमने अपने शागिर्दों को तज़रबा कर-कर के सिखलाते रहे और जहाँ-जहाँ ज़रूरत पड़ी, इशारों-इशारों में तसल्ली करते रहे। यही पुराना रिवाज़ था कि चेले

अपने गुरु के साथ चन्द अरसे तक रह कर अमली तामील हासिल करते रहे हैं, जैसा कि उपनिषदों में सब तालीम इशारों में सबाल और जबाब के सिलसिले में पाई जाती है। जनाब कबीर साहब, नानक साहब, दादू साहब, तुलसी साहब हाथरस के शब्दों में सिर्फ इशारे पाए जाते हैं।

यहाँ तक तो इशारों से काम लिया गया है। इसके बाद फिर तफ़सील के साथ इशारों को खोल-खोल ज़ाहिर कर देने का सिलसिला जनाब आलीमुक़ाम रायसाहब सालिगराम संत व नीज़ जनाब देवी साहब संत मुरादाबादी और पां ब्रह्मशंकर जी साहब और जनाब साहब जी महाराज मुकद्दस मुआब के ज़ात बाबरकत से जुहूर में आया। लेकिन जिस तरह कि निहायत तफ़सील के साथ ज़ाहिर करने का बीड़ा महर्षि शिवब्रतलाल साहब एम. एम. (परमात्मा उनकी कोशिशों का फल दे) ने उठाया और तमाम दुनिया में इन मुकद्दस (पाक) और पोशीदा (छिपे हुए) भेदों को और इस इल्म को बिना रोक-टोक और परदादारी के सब के आगे रख दिया है, इसकी मिसाल शायद अब और आगे चलकर मिले तो मिले।

इसी तरह पर मुसलमान सूफ़ियायकराम के पिछले लोगों ने भी बजिन्सही यही अमल किया है। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतउल्ला अलह * व हज़रत बायज़ीद बुस्तामी अलहउलरहमत * व दीगर बुजुर्गान ने निहायत ऊँचे दर्जे के कलाम इरशाद फ़रमाये हैं। शम्सतबरेज़ साहब व दीगर सदहा (सैंकड़ों) बुजुर्गों ने अपने कलाम में खूब-खूब इशारों में गुफ़्तगू की है, मगर ये इशारे-ही-इशारे हैं।

हज़रत मुहीउद्दीन शेख मोहम्मद अब्दुल क़ादिर साहब जीलानी रहमतउल्ला अलह के वाज़ (उपदेश) और कलाम इस क़दर ज़्यादा और बड़ी-बड़ी जिल्दों में हैं जिनमें निहायत बारीक और गहरे भेद पड़े हुए हैं कि मामूली आलिमों की समझ का तो कहना क्या, उस वक्त के और उसके बाद के फ़कीहों, कर्मकाण्डी इमामों और बुजुर्गों ने कानों पर हाथ रखकर फ़रमाया है कि हम लोग इन गहरी बातों तक नहीं पहुँच सकते।

अलबत्ता, पिछले बुजुर्गों में हज़रत मुहीउद्दीन अकबर मोहम्मद इब्न अरबी अलहउलरहमत ने जो काम किया है वह तफ़सील के ज़ाहिर करने में संग-बुनियाद का काम देता है। आपने निहायत खूबी के साथ आत्मा और प्रकृति के मुताल्लिक बहस की है और खूब भेदों को खोला है। ग़ालिबन इन्ही हज़रत का कलाम और तफ़सील ऐसी है कि हर ज़माने के बुजुर्ग अपने अपने अनुभव (कशफ़ीउलूम) को जब तहरीर फ़रमाते हैं तो आपके उसूलों को सामने रखकर इब्तदाई खाका खींचने में या तमहीद उठाने में मदद लेते हैं। अगर ऐसा नहीं करते तो दौरान तहरीर और तकरीर में हवाला दिए वगैर नहीं रह सकते हैं, ताकि सनद (प्रमाण) के हुकुम को पूरा कर सकें।

मौलाना रूमी अलहउलरहमत और हज़रत इमाम गिज़ाली रहमतउल्लाअलह और यहाय-ल-उलूम के मुसन्निफ़ (लेखक) साहब ने इल्म अख़लाक़ और तसव्वुफ़ को (सदाचार और ब्रह्म विद्या को) निहायत शानदार तर्ज़ से सबके सामने पेश किया है जिसकी मिसाल अगर हर फ़िरका और पंथ वाले अपनी पैरवी के लिए अपने रूबरू रख लें तो बहुत बड़ा हिस्सा फ़ायदे का उठा सकें।

आखिर में इस इल्म - लतायफ़ के तफ़सीलवार बयान करने का जी बहुत बड़ा ज़खीरा हज़रत इमाम रब्बानी हज़रत शेख अहमद साहब मुजद्दिद अलिफ़सानी रहमतुल्लाअलह ने अपने आगे आने वालों के लिए छोड़ा है उसके बयान करने के लिए ज़बान आजिज़ है। पिछले लोगों ने जो तहकीकात की है वह छिपे हुए भेदों और इशारों-इशारों तक रही और तरतीब और आर्डर का कहीं पता नहीं। लेकिन अपने जो गहरे और बारीक और छिपे हुए भेदों को खोला है उसकी मिसाल कहीं ढूँढें नहीं मिलती। आज तक बड़े बड़े कामिल, आलिम, फ़ाज़िल, फ़कीर उन मुक़ामात की तफ़सील और बुलन्द-परवाज़ी (ऊंची उड़न) की धूल को नहीं पहुंचे। आपके नाम मुबारक में जो मुजद्दिद अलिफ़सानी का खिताब लगाया गया है वह सिर्फ़ तहकीकात जदीद (नवीन खोज) के नतीजे कि वजह से है। इस इल्म में जो इससे पहले तहकीकात नहीं हुई थी उसके आगे आपने तहकीकात फ़रमाई और निहायत शरह (व्याख्या) और बस्त (विस्तार) के साथ तरतीबवार बयान फ़रमाया है।

पस नतीजे के तौर पर यह कहा जा सकता है कि परमात्मा ने इस इल्म लतायफ़ यानी चक्रों और कमलों के ज्ञान को हर तरीका (पंथ) और मुल्क के उन बुजुर्गों को अता फ़रमाया है जो आखिर ज़माने में हुए हैं।

हज़रत शाह बलीउल्ला साहब मुहद्दिस देहलवी अलह उलरहमत इस इल्म लतायफ़ और इल्मकलाम और हदीस वगैरा के मुस्तनिद (माने हुए) और कामिल शख्स गुज़रे हैं। इनकी तसनीफ़ (रचनाएँ) और कलाम निहायत दर्जे तरतीब के साथ हैं। इनकी खूबी मुलाहिज़ा से ही मालूम हो सकती है। मगर अफ़सोस है कि जिस जुबान (भाषा) में आपकी किताबें हैं उस जुबान को अब लोग नहीं जानते हैं और न ही अब रिबाज़ रहा है। अलावा इसके, इस्तलाहें (परिभाषायें) इस इल्म की अलग हैं जिनसे कि ज़ाहिरी आलिमों को बाक़फ़ियत नहीं है। ऐसे आलिम बहुत कम मिलते हैं जो इल्म ज़ाहिर भी रखते हों और अन्दर का इल्म यानी तसव्वुफ़ (ब्रह्म-विद्या) भी जानते हों और जिन्होंने वाक़ायदा तसव्वुफ़ की तालीम अमली (प्रक्टिकली) हासिल की हो।

इस फ़कीर को जुबान फ़ारसी और अरबी में पूरी बाफ़कियत नहीं है। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि हरफ़-शनासी (अक्षर ज्ञान) का दम भर लेना मुज़ायका नहीं। पस ऐसी सूरत में क्या उम्मीद की जा सकती है कि इल्मलतायफ़ के मुतल्लिक कुछ गुफ़्तगूँ कर सकें। अलबत्ता, सोहबत (सत्संग) मुरशिद और उनके इशारात पर अर्से तक ग़ौर फ़िक्र का मौक़ा खुशकिस्मती से रहा है इसलिए खींचातानी करके यह कोशिश करता हूँ कि कुछ-न-कुछ इसके मुतल्लिक इस्लामी तसव्वुक के नुक़तों और पोशीदा भेदों पर रौशनी डाल सकूँ।

* "उन पर खुदा की रहमत हो" इस प्रकार के अभिनन्दन के वाक्य दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए कहने का मुसलमानों में रिवाज़ है। अतएव स्वर्गीय मुसलमान संतों के नाम के साथ इस मर्यादा का पालन किया गया है।

संयम और सद्गुरु

जितने लोग इस तसव्वुफ और ब्रह्म-विद्या को जानने वाले हैं उनमें से जिनको इन लतीफों यानी मुकामों का ज्ञान और इल्म ज़्यादा हुआ करता है उतना ही वह जानते हैं की नफ़स को मुहज्जब (संयम शील) किस तरह बनाया जाता है।

नफ़स बहुत तरह की है। मसलन नफ़स नातका, नफ़स मुत्तममय्यना व नफ़स लव्वामा, नफ़स अम्मारा, वगैरा। इन सबका बयान अपने-अपने मौके पर किया जावेगा। यहाँ सिर्फ़ इतना समझ लेना चाहिए कि परमात्मा ने जो-जो गुण, अवगुण, आदतें, ख्वाहिशात, इरादे, जज़बे, मंसूबे समझने वगैरा की शक्तियाँ इस जिस्म से बाँधी हैं अगर वह तरतीव और कायदे में नहीं हैं - मसलन मन और इन्द्रियाँ अक्ल वगैरा बस में नहीं हैं - तो इनको फिर नये सिरे से काबू और तरतीब में लाया जावे। इसको नफ़स का मुहज्जब करना कहते हैं, जैसा कि यह नियम वगैरा उसूलों से शम, दम, तितिक्षा वगैरा किये जाते हैं। मतलब यह है कि जिस सूफी या साधु को पूरा ज्ञान और इल्म इन मुकामात का होगा उसी क़दर सहूलियत और आसानी शम-दम वगैरा करने और कराने की होगी वरना नहीं ।

जितना ज़्यादा लतीफों के असरात (प्रभाव) और उनके हुक्म (शक्ति) के मुताबिक इन साधुओं को ताकत ज़्यादा होगी उसी क़दर उसे लोगों को या अपने शागिर्दों को सिखलाने और तालीम करने की ताकत और कुदरत ज़्यादा होगी । क्योंकि साधू को अगर मुकामात का इल्म बखूबी है लेकिन अमली ज्ञान उसको ऐसा नहीं हुआ है कि उस मुकाम पर उसको बखूबी काबू हो कि जब चाहे उसको मौक़ा मुनासिब के साथ चालू कर सके या काम निकाल सके,तो महज़ ख्याली वाक़फ़ियत और ज्ञान से तालिब और जिज्ञासु को सिखला नहीं सकेगा । मालूम करना चाहिए कि साधू और फ़कीर की बहुत सी किस्में हैं। जिनमें से कि एक किस्म के साधू वे होते हैं जो साहबे इरशाद कहलाते हैं। इनको मुरशिद (सद्गुरु) भी कहते हैं। इन सब किस्म के साधू फ़कीरों की अलहदा -अलहदा तारीफ़ें फिर आयन्दा मौके पर बतलायी जायेंगी। यहाँ सिर्फ़ इतना समझ लेना चाहिए कि साहबे इरशाद सिर्फ़ उनको कहते हैं कि जिनके सुपर्द सिर्फ़ भटके हुए लोगों को सीधी राह पर लाना होता है। वह तालीम और उपदेश अन्तर में करते हैं और दुनियाँ और उक़वा (परलोक) के व्यवहार और कारबार ठीक कर लेने की तालीम करते हैं। यानी लोक और परलोक को सँभाल लेने की मुनासिब तालीम दिया करते हैं। इसलिए जो साधू सूफी फ़कीर ऐसे हैं कि पहले उनको हर आन्तरिक अभ्यास के सिलसिले में उतार-चढ़ाव के लिए मुकामात और लतीफों की जगहें, उनके नाम, उनके साथ काम करने वाली ताक़तों , रंग-रूप, असर और काम से बखूबी वाक़फ़ियत है और अलावा किताबी और ऊपरी वाक़फ़ियत के उनको पूरे अंगों और अरकान के साथ अमल करने के बाद काबू और कुदरत भी है तो वे साहबे इर्शाद या तालीम करने के मुस्तहक़ हैं वरना नहीं।

कसौटी

अगर तमाम उम्र सूफी व साधू लोग दूसरे लोगों को उपदेश करते रहें और राह, मंज़िल, और ठहराव की जगहों से नाबाफिक़ रहें तो उनकी मिसाल ऐसी है जैसे बूढ़ी औरतें जिनको तमाम उम्र के कच्चे तज़ुर्बे और किसी-न-किसी तरह चंद दवाओं के नाम याद हो गए हैं और वे इलाज किया करती हैं, या जो लोग कि कुछ थोड़ा पढ़े-लिखे हैं और अमृतसागर और इलाजुलगुर्बा की किताबें देखकर इलाज करने लग जाते हैं और लोगों का नुक़सान करते हैं ।

बरख़िलाफ़ इसके वह साधू महात्मा जो मंज़िल और मक़ाम और राह के ठौर-ठिकाने से खूब वाक़िफ़ होते हैं वह ऐसे होते हैं जैसे जानने वाले वैद्य और हकीम जिनको कि इल्म-तशरीह (एनाटोमी) या बदन के अंदर का इल्म है और बीमारी की सब किस्में जानते हैं और यह मालूम है कि बीमारियां किस वजह से पैदा होती हैं और फिर उनकी निशानियाँ (सिम्पटम्स) अलामात और तशखीसों और उनके अलहदा अलहदा इलाज खूब मालूम हैं, इनके अलावा पुराने मशहूर हकीमों के तजरबे और हाल की तहकीकात और हाल की मालूमात की उनको ताज़ा ताज़ा ख़बर रहती है ।

दूसरे तौर पर इस तरह समझना चाहिए कि जो सूफी या इल्म लतायफ़ के पूरे वाक़िफ़कार हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे जंगलों में रास्ता बताने वाले, जो हमेशा वहाँ रहते हैं और जंगल की सब ऊंची नीची रास्तों से वाक़िफ़ हैं और आबादी और खतरे की जगहें भी खूब मालूम हैं।

बरख़िलाफ़ इसके इस इल्म से नावाक़िफ़ सूफी ऐसे हैं कि जिस तरह चन्द आदमी रास्ते से जंगल में बहक गए हों और रास्ता से अलग होकर बेरास्ते होकर भटकने लगे हों। उनमें से कुछ तो सर टकरा-टकराकर मर गए क्योंकि उनका न कही इरादा था और न कोई रास्ता जानी हुई थी और बाज लोग किसी न किसी तरह जंगल से निकल आये। जब मुद्त के बाद अपने अपने घर वापस आये तो हर शख्स ने अपना -अपना हाल अलग-अलग बयान किया और पूरी बात किसी ने भी न कही। बल्कि एक की बात दूसरे की बात से बिलकुल ख़िलाफ़ हुई जो एक दूसरे की ज़िद (विरुद्ध) थी। अब इन सब में से कोई भी ऐसा नहीं जो एक दूसरे की बरख़िलाफ़ी को दूर कर सके और असल तत्व को बतला सके और जो बरख़िलाफ़ियां हैं उनको ज्यों की त्यों अपने अपने मौके और जगहों पर रखकर द्वेष -भाव को दूर कर दे। सुनने वाले हैरत में रह जाते हैं कि कोई बात उनकी समझ में नहीं आती और वहम और दुविधा के शिकार हो जाते हैं।

इसलिए जो लोग अहलेतमकीन हैं, यानी जिनको साक्षात्कार होकर स्थिति की प्राप्ति हो गयी है, वे लोग हैं जो अवतारों के वारिस और क़ायम मुक़ाम कहलाने के क़ाबिल हैं। अगर कोई आदमी इन बुज़ुर्गों की राह

पर चलना चाहे तो दरअसल उनकी राह बिना इल्म- लतायफ़ यानी कमलों का ज्ञान हासिल किये मयस्सर नहीं हो सकती हैं।

सीधा रास्ता वह है जिसमें न कोई तकलीफ़ है और न भटकाव, और जो बिना चक्रों और कमलों के ज्ञान के नामुमकिन और बेफ़ायदा भी है। गरज़ कि इल्म-लतायफ़ यानी राह और मंज़िलों का ज्ञान परमात्मा की बड़ी देन है, जैसा कि ऊपर बयान किया गया है, जो ईश्वर ने आख़िर ज़माने के बुजुर्गों को दी है।

अहले सलूक या पन्थाई दो किस्म के होते हैं। इस हिसाब से जो रास्ता ज़िक्र यानी जाप, शब्द, अभ्यास, भजन का इस वक्त रायज़ है वह दो तरह पर है और फ़िक्र यानी मनन, चिन्तन, स्मरण। मराकबा भी दो तरह पर है।

पहिली किस्म तो यह है कि एक शख्स को परमार्थ हासिल करने का शौक पैदा हुआ। उसने जिस तरह बन सका, एक रास्ता पकड़ कर चलना शुरू किया। आख़िर में किसी वक्त उसको शान्ति मिली और ऐसे असर उससे ज़ाहिर हो गए या होने लगे कि दूसरों को सिखलाने की काबिलियत उसमें मालूम होने लगी और दूसरों को बतलाने लगा। अब वह जिस जगह या जिस मंज़िल या मुक़ाम पर उसको पहुँच कर शान्ति नसीब हुई थी उसी जगह और मुक़ाम तक का इशारा उसने अपने मुरीदों को दे दिया और वहीं तक तालीम दे दी। इसका मतलब यह है कि इसके आगे की खबर उसको नहीं और सिवा इस कमाल के जो उसको हासिल हो चुका, कोई दूसरा कमाल उसमें नहीं है। पस उसके मुरीदों ने उसकी बतलाई हुई बात को याद कर लिया और अपना पूरा भरोसा उस पर करके आगे की तलाश से हाथ उठाकर इत्मीनान से बैठ रहे और यह समझ लिया कि बस अब आख़िरी कमाल और दर्ज़ा यही है - इसके सिवाय अब कुछ हासिल करने को बाकी नहीं रहा। तो अक्सर इस किस्म के साधू सूफ़ी सिर्फ़ एक ही कमाल और निस्बत को रखते हैं। मिसाल के तौर पर यह समझ लो, किसी ने महज़ क़ल्ब के लतीफ़े पर उबूर हासिल कर लिया या लतीफ़ेरूह या सिर या ख़फ़ी या अखफ़ा या नफ़स नातका वगैरा में किसी एक पर काबू पा लिया।

हिन्दू साहबान इस तरह समझ लें कि एक साधू ने हृदय-चक्र को बेध लिया या भृकुटि स्थान और आज्ञाचक्र को पार कर गया या ज़्यादा से ज़्यादा त्रिकुटी के मुक़ाम को तय कर लिया, तो यह काफी नहीं है। क्योंकि आगे अभी बहुत मुक़ाम तय करने को बाकी हैं। ऐसी सूरत में किसी अभ्यासी को महज़ शौक और क़ल्फ़ यानी बेकरारी तलाश और तड़प की कैफ़ियत हासिल होकर रह गयी और उसके आगे न बढ़ा। बाज़ों को रूहों से मुलाक़ात या फ़रिश्तों और देवताओं की मिसाली शक़ल या विराट देश से सम्बंधित होकर रह गया और आगे न चले या शब्द अभ्यास की मायावी सूरतों पर अभ्यास हो गया असल शब्द तक रसाई नहीं हुई। तो इस सूरत में साधुओं और सूफ़ियों का तमाम लतीफ़ों यानी चक्रों में से एक या दो लतीफ़ा मुहज़िज़ब या प्रज्वलित हो जाता है, बाकी सब उसी तरह अन्धकार और मन्द गति में रह जाते हैं। यह कमाल नहीं है।

अगर तुम्हारे सब लतीफों का कमाल किसी तरह तुम्हारे सामने शकल बन कर आ जावे तो तुम, अगर देख सकोगे तो, यह देखोगे कि तुम्हारा आधा चेहरा स्याह और आधा सफ़ेद या धब्बेदार।

थियोसोफिकल सोसाइटी के चन्द जानने वाले मेम्बरान मैजिक लानटेन के ज़रिये सूक्ष्म शरीर और जिस्म लतीफ़ के अक्स दिखाया करते हैं। उसमें तत्वों के रंग और लतायफ़ की असली शकल साफ़ नज़र आती है। जो तत्व गालिब होता है वही ज़्यादा नज़र आता है। जिसके लतीफ़े मुहज्ज़ब नहीं होते उसके कुल मुजस्सिम सूक्ष्म शरीर की तस्बीर निहायत भद्दी दिखलाई पड़ती है। बरखिलाफ़ इसके साधुओं और महात्माओं के सूक्ष्म शरीर निहायत सुडौल और पाक नज़र आते हैं।

हमारे बुजुर्गों में से ज़्यादा तादाद में ऐसे बुजुर्ग गुज़रे हैं कि जो शख्स सामने आता था उसका हाल और सूक्ष्म शरीर का हाल फौरन दरयाफ़्त करके बता देते थे कि फ़लाँ शख्स का फ़लाँ लतीफ़ा ज़ाकिर है और फ़लाँ का दूसरा और उसके मुकाम और सूक्ष्म शरीर की सूरत देख लेते थे। हमारे मुर्शिदना (गुरुदेव) मौलाना फ़ज़ल अहमदखाँ साहब अलहउलरहमत ने एक मरतबा, जब वह एक मकान में तशरीफ़ ले गए, तो यह बतला दिया कि इस खास मुकाम और जगह में फ़लाँ साहब बैठकर ज़िक्र शग़ल किया करते हैं और इस मुकाम पर फ़लाँ साहब अब ख़याल फ़रमाइये कि आपका इल्म लतायफ़ किस दरजे नाज़ुक, बारीक और लतीफ़ था।

ऐसे सूफ़ी और साधू जिनका एक आध लतीफ़ा ज़ाकिर हो गया या कोई मुकाम जाग्रत हो गया और एक निस्बत हासिल हो गयी, अपने आपको कामिल समझ कर यह डींग मारा करते हैं कि शरीयत (धर्मशास्त्र) मौलवियों के लिए है और खुशक ज़ाहिदों के वास्ते है। हम जिस मुकाम पर पहुँचे हैं वहाँ शरीयत का कुछ दखल नहीं है। अफ़सोस कि, बिना कुछ लतीफ़ों और मुकामों के के तय किये हुए शरीयत अधूरी और नाकिस रहती है। असल और हकीकी शरीयत पर तब पहुंचता है जब कि कुल मुकामात तय हो जाएँ। बिना शरीयत और धर्मशास्त्र के फ़कीर और साधू नाकिस हैं। बड़े बड़े मस्त और साधू महात्माओं ने अब तक इस मुअम्मे को नहीं समझा कि शरीयत क्या चीज़ है। इसलिए जिनका यह लोक नहीं सँभला उनका परलोक क्या सँभलेगा ?

जो शौकीन लोग अभ्यास करते हैं और जिस तरह से हासिल करते हैं और फिर जो नतीज़ा होता है उसकी पहली किस्म की कैफ़ियत बयान में आ चुकी है। अब दूसरी तरह पर बयान की जाती है।

दूसरी तरह भजन और स्मरण यानी ज़िक्र और फ़िक्र के अभ्यास को इस तरह हासिल किया करते हैं कि कामिल और पूर्ण संत सदगुरु के बतलाये हुए अभ्यास को उनके सत्संग में जाकर करते हैं। यह संत सदगुरु वे होते हैं जिनकी तारीफ़ संत मत की किताबों में लिखी है और जिनको उन दयालु और मालिकेकुल ने अपनी दया की मौज से दयाल देश से सीधा इस जंगल के जीवों का उद्धार करने और इस भवसागर से पार उतारने को भेजा है और वक्त -वक्त पर भेजा करते हैं। जो-जो बातें और मुकामात पहिले गुज़रे हुए महात्माओं से तय नहीं हुए और बाक़ी रह गए थे वह अब इन आख़िरी ज़माने के बुजुर्गों पर उतारे गए, ताकि कोई कसर तालीम में बाक़ी न रह जाये और मालिकेकुल का जो इरादा था वह इनको भेजकर पूरा किया गया। जो बातें कि

पूर्णगति और मुकम्मिल बनाने के लिए दरकार थीं वह इन बुजुर्गों के हृदय में बराहरास्त उतारी गयीं। पन्थाइयों और राह चलने वालों को बराबर सिलसिले और तरतीव के साथ मन्ज़िलों को तय करते आये और हज़ारों लाखों तालिबों और जिज़ासुओं को इन महात्माओं ने कायदों की पावन्दी, जैसी कि होनी चाहिए, कराई है और खुद की है।

इस तरह पर ऐसे मुकम्मिल उस्तादों से सीखे हुए लोग असल मुक़ाम और पद को हासिल करते हैं। किसी दरमियानी मंज़िल और रास्ते पर इन लोगों का टिकासरा (अटकाव) नहीं होता है और न रास्ते की किसी मंज़िल पर अटक कर अधूरे रह जाते हैं। लेकिन अगर इनको लतायफ़ और मन्ज़िलों का तफ़सीलवार ज्ञान और इल्म नहीं हो पाता तो यह ज़रूर है की इनको चन्द तरह के नुक़सान पहुंचने का ख़ौफ़ होता है। इन नुक़सानों का बयान आगे दिया जाता है।

अविद्या का फल

चूँकि लतीफ़े या चक्र बहुत हैं जिनका मुफ़स्सिल तरतीबवार बयान आयन्दा अपने मौके पर किया जा सकता है। यहाँ पर समझाने के लिए मुख्तसिर तौर पर यह बयान किया जाता है कि मसलन इस जिस्म और पिण्ड शरीर के हृदय चक्र में पाँच मुक़ामात कायम किये गए हैं जो इस जिस्म के आलमे कबीर यानी ब्रह्माण्ड के पाँच मुक़ामात के अक्स हैं। और वह पाँच मुक़ामात यह हैं :- (१) लतीफ़ा क़ल्ब (२) लतीफ़ा रूह (३) लतीफ़ा सिर (४) लतीफ़ा ख़फ़ी (५) लतीफ़ा अख़फ़ा

ज़्यादातर होता है कि बाज़ मुरीद का कोई लतीफ़ा पैदायशी ज़्यादा ज़ोरदार होता है और दूसरे कमज़ोर और किसी का कोई मसलन एक शख्स का लतीफ़ा क़ल्ब पैदायशी और अपने संस्कार से ज़ोरदार है तो दूसरे कमज़ोर। असल फ़ितरत यानी संस्कार की वजह से सब लतीफ़ों में एक या दो ज़्यादा ज़ोरदार हैं, बाकी कमज़ोर। और दूसरे शख्स का पैदायशी तौर पर अपने संस्कार की वजह से लतीफ़ा रूह ज़ोरदार है और लतीफ़ा क़ल्ब कमज़ोर। अब जो कोई शख्स बिना जाने बूझे अंधेपन से अभ्यास करता है तो वह सब लतीफ़ों को अन्धाधुंद सिरे से जगाना और ज़ोरदार बनाना शुरू करेगा और तरतीबवार बनाता जायेगा। इस सूरत से एक मुद्दत और बड़ा वक्त बल्कि सारी उम्र खर्च हो जाएगी। और चूँकि उमरें अब कम हैं और मौका अच्छा हाथ नहीं आता, मंज़िल आखिरी पर मुश्किल बल्कि नामुमकिन होगा।

सब मुक़ामों को जाग्रत करने और उनको पूरी तौर पर जोश में लाने में बड़ी देर और कठिनाई दरकार है। पस ज़रूरत यह है कि जो लोग उस्ताद कामिल हैं और इस इल्म को जानते हैं उनकी निगरानी और हिदायत के अन्दर रहकर अभ्यास किया जावे, ताकि वह उस्ताद उस लतीफ़े को जो कमज़ोर है तवज्जह करके ज़ोरदार बनावे और उसी के साथ-साथ दूसरे लतीफ़ों की भी रियायत करता जावे ताकि वह भी सिलसिले के अन्दर अपने वक्त पर आसानी से और कम वक्त में संभल जावे।

अक्सर यह भी होता है कि पूरे उस्ताद यह जानते हैं कि एक खास तरीके पर अभ्यास करने से बाकी दूसरे लतीफ़े खुद-ब-खुद अपने असल को पहुँच जाते हैं। मसलन हृदय चक्र के एक लतीफ़े को लेकर उस पर खास तवज्जह रखकर अमल व शग़ल किया जाता है तो उस चक्र के बाकी सब मुक़ामात तय हो जाते हैं। सबकी बारी-बारी से जगाने की ज़रूरत नहीं रह जाती।

इसी तरह ब्रह्माण्ड के किसी खास मुक़ाम को जगाने से बाकी दूसरे खुद-ब-खुद जग जाते हैं ।

पस अगर किसी को यह पूरा ज्ञान और इल्म इनका हो तो बतलाइये कि कितनी दिक्कत और वक्त का बचाव हो जाता है और ख्वामख्वाह परेशानी और हैरानी से बच जाना होता है ।

यह बात खूब मालूम है कि ख्वाजा शाह वहाउद्दीन साहब नक्शबंद अलयउलरहमत से पहले बुजुर्ग ज़िक्र-जहर फरमाते थे। यानी शब्द का अभ्यास जुबान से ज़ोर-ज़ोर से करते थे । आपने यह तय फ़रमाया कि शब्द का अभ्यास दिल की जुबान से किया जाया करे ।

आपसे पहले बुजुर्ग और महात्मा शुरु से गुदाचक्र को लेकर अभ्यास किया-कराया करते थे। आपने यह फ़रमाया कि अब आयन्दा से नीचे के नासूती और सिफ़ली (स्थूल) मुकामात पर अभ्यास करना छोड़ दिया जाय। हृदय चक्र के मलकूती मुकाम के लतीफ़ों को जगाया जाय। और उसकी तरतीब यह रखी थी कि क़ल्ब से शुरु करके तरतीबवार बारी-बारी से उन सब पर तवज्जह दी जाय और जब यह ख़त्म हो जाय तब नुक़ता सवैदा यानी प्राणबिन्दु के मुकाम पर जिसको नफ़स नातका बोलते हैं, शुरु किया जावो। चुनाचे पुराने नक़्शबंदी बुजुर्ग जिनको कि हज़रत शेख़ अहमद मुज़द्दित अलिफ़सानी रहमतउल्लाअलय से ताल्लुक नहीं है अब तक ऐसा ही करते हैं। शाह बहाउद्दीन साहब नक़्शबंद अलयउलरहमत यह फ़रमाते हैं कि -

अव्वले मां आखिरे हर मुतहीस्त

आखिरे मां जेबे तमन्ना तिहीस्त

यानी - जो दूसरे बुजुर्गों के यहाँ तामील की आखिरी मंज़िल है वहाँ से हमारी तालीम की इब्तिदा होती है। हमारी आखिरी मंज़िल यह है कि हमारी वासनाओं, तमन्नाओ और ख्वाहिशों की जेब ख़ाली है यानी वहाँ कुछ नहीं है।

इसके बाद जो बुजुर्ग आगे चलकर हुए हैं वह कुछ-न-कुछ तरमीम और आसानी करते आये और जिस क़दर ज़्यादा इनको लतायफ़ का इल्म होता गया उसी क़दर सफ़ाई, आसानी, कम वक्त लगाने का ख़याल करके तरमीम, बदल अभ्यास में फ़रमाते गए।

आखिर में हज़रत शेख़ मुज़द्दित आलिफ़ सानी सरहिन्दी ने, जो जहांगीर केवक्त में जीवों को चिताने की गरज़ से आये थे, ऐसी बड़ी और सबसे ज़्यादा आसान तरमीम अभ्यास की रीति में ईज़ाद फ़रमाई कि लाजबाब साबित हुई।

आपने हृदय चक्र के यानी मलकूती मुकाम के सिर्फ़ एक लतीफ़ा क़ल्ब को काफ़ी समझा। जिसकी तहज़ीब पर कामिल तवज्जह करने की हिदायत फ़रमाई। बक्रिया लतीफ़े उसके ज़िम्न में आ गए। इसके बाद फ़ौरन ही नफ़स नातका और नुक़ता सवैदा यानी प्राणबिन्दु को लेकर वहाँ पर पहला क़दम रखना मंज़ूर फ़रमाया और फिर दूसरे क़दम का उरुज सहस्त्र दल कमल और त्रिकुटी के मुकाम पर तज़बीज़ फ़रमाया।

आपने इक्कीस दायरे और चक्र इकेबाददीगरे यानी एक के बाद दूसरा कायम करके उनका तफ़सीलवार बयान फ़रमाया। ये सब बातें आपकी बनाई हुई किताबों में खूब-खूब दर्ज़ हैं।

दरअसल इत्मीनान और शान्ती का मुकाम बहुत मुद्तों में और बहुत सी मंज़िलों को तय करने के बाद मिलता। बहुत मरतबा बका (स्थिति) होती है। खुलासा यह है कि हर जाग्रत और सुषुप्ति के बाद तुर्य्या अवस्था आती है। हर मंज़िल और मुकाम की जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुर्य्या है। आखिरी तुर्य्या वहाँ है जहाँ माया का लगाव नहीं है। यह आखिरी सतदेश में है, जो असल कूटस्थ है और स्थिति है। यह मुकाम खालिस इत्मीनान और शान्ती का है। पस असल फ़ितरत (अपने संस्कार के) लतीफ़े पर बका का होना और वहाँ कायम हो जाना यह सबूत रखता है कि वही लतीफ़ा उसका सबसे ज़्यादा ज़ोरदार था।

पहिला नुकसान जो लिखा गया है उसके अलावा यह दूसरा नुकसान है कि राह चलने वालों पर बहुत बहुत तरह के हालात और बहुत तरह की फ़नायें (लय अवस्थाएं) और बकायें (स्थितियां) आती जाती रहती हैं। पस अगर वह यह न समझ सकेगा कि उसकी जो हालत पैदा हुई है वह किस लतीफ़ा और मुक़ाम के खुल जाने की वजह से पैदा हुई है तो वह हैरत में पड़ जायेगा और यह ख्याल करेगा कि मुझको कुछ नहीं आया और कुछ मालूम करेगा तो यह न समझेगा कि इस हालत से क्या फ़ायदा होगा और क्या इसका असर होगा। और आखिर को यह समझ लेगा कि जो कुछ मुझको अब तक दिखलाई पड़ा है या मालूम हुआ है वह सब बेहूदा था और मुमकिन है ख्याल करेगा कि वह मन की तरंगें हों। यह ख्याल करके उसको बड़ा रंज होगा कि ख़वामख़वाह वक़्त जाया हुआ और इन मामलात में पड़ना बेकार है। इसलिए उसको सख़्त कब्ज़ और रुकावट पैदा हो जावेगी। और जो काम वह कर रहा था उसको छोड़कर बैठ रहेगा क्योंकि बवजह अज्ञान होने के इस काम में उसको लज़ज़त न मिलेगी। जिस काम में किसी को आनन्द नहीं मिलता उस काम को वह हरगिज़ करना पसन्द नहीं करता।

लेकिन अगर किसी अभ्यास के साथ-साथ पूरी-पूरी वाक़फ़ियत इस बात की है कि जो हालत उससे पैदा हुई है वह उस लतीफ़े की वजह से पैदा हुई है और जो लय और स्थिति यानी फ़ना और बका पैदा हुई है वह किसी खास वजह से हुई है तो उसको रन्ज न होगा और न कभी रुकावट होगी जिसको कब्ज़ कहते हैं ऐसे शख्स को हर वक़्त उम्मीदें लगी रहती हैं। उस आनन्द में आकर आगे कदम बढ़ाये चला जाता है। घबरा कर काम को नहीं छोड़ता। और आखिरकार मन्ज़िले मक़सूद को पहुंचता है।

अब तीसरा नुकसान जो होता है उसको जानना चाहिए। एक अभ्यासी जब देखता है कि एक दूसरे अभ्यासी का या साधू या महात्मा का हाल उसके हाल से नहीं मिलता बल्कि बिल्कुल बरखिलाफ़ है और कोई कुछ कहता है तो दूसरा कुछ समझता है तो वह बड़े वहम और शक में पड़ जाता है। कभी तो वह कुछ करने लग जाता है और कभी कुछ करने पर आमादा होता है। नतीज़ा यह निकलता है कि न यह होता है और न वहां सबसे रह जाता है और मतलब नहीं निकलता।

ऐसी बातें बहुत ज़्यादा तज़रबे और देखने में आई हैं और रोज़मर्रा इन्हीं बातों से काम पड़ता है। सत्संग में लोग निहायत वहम और शक-शुबह की हालत में गिरिफ़्तार नज़र आते हैं। सैकड़ों सबाल खतों में लिख-लिख कर भेजा करते हैं या सामने आकर दरयाफ़्त करते हैं। बाज़ लोग सब्र का पत्थर छाती पर रख लेते हैं और कुछ दरयाफ़्त नहीं करते। मगर आखिरकार ज़ब्त नहीं कर सकते और दिल का प्याला बे इत्मिनानी से इतना भर जाता है कि छलक जाता है या हमेशा के लिए टूट जाता है और चुपचाप काम को छोड़कर बैठ रहते हैं और ऐसी ज़मात को धोकेबाज़ ख्याल कर लेते हैं या यह ख्याल कर लेते हैं कि सब ढोंग और ठग विद्या है। यह बड़ा भरी नुकसान है।

इसके अलावा एक बात यह है कि एक साधू या महात्मा को देखो कि उसकी एक किस्म की इन्तहाई हालत बढ़ी हुई नज़र आती है। दरअसल उसकी यह इन्तहाई हालत मुक्कमिल और पूरी हालत नहीं हुआ करती, बल्कि उसकी असली हालत यह है कि अपने पुराने संस्कार की वजह से उसका जो लतीफ़ा निहायत ही ज़ोरदार था और फिर अभ्यास की वजह से और भी रोशन होकर ऐसा मुक्कमिल और इन्तहाई दिखाई पड़ने लगा कि दूसरे लोग देखकर ताज़्जुब करते हैं और उस साधू को कामिल और आखिर तक पहुंचा हुआ ख्याल करते हैं हालाँकि वह होता नहीं। क्योंकि सिर्फ़ एक लतीफ़ा उसका इस क़दर इन्तहा को पहुंचा है और बाकी दूसरे लतीफ़े सब ज्यों-के-त्यों कोरे हैं। तो अब दूसरा देखने वाला अभ्यासी इसी

को यह समझ बैठता है कि इस काम की हकीकत की आखिरी मंज़िल यही है। अब चूँकि लातायफ़ का इल्म इसको है नहीं, इसलिए इसी ज्ञान को काफ़ी और आखिरी समझ कर काम को खत्म कर देता है और बीच में रह जाता है। असली मुराद को नहीं पाता ।

इसी सिद्धान्त और उसूल से हर अभ्यासी की (जो चक्र विद्या से अनभिज्ञ है) इब्तिदा एक अलहदा और खास तरीके से हुआ करती है। जिसका जो लतीफ़ा पैदायशी ज़ोरदार होता है उसी पर उसका अंजाम और ठिकाना हो जाता है । पस सब नाक़िस और नामुक्कमिल रह जाते हैं। यही बड़ा सबब नुक़सान का है। सबसे बड़ा नुक़सान यह है कि अभ्यासी को बिना मंज़िल और रास्तों के ज्ञान के ब्रह्म विद्या का ज्ञान बहुत बड़ी मुद्दत और कोशिशों से हासिल होता है। वही इल्म और हालतें इल्मलतायफ़ के जानने की वजह से निहायत ही आसानी के साथ थोड़ी मुद्दत में आ जाती है और दिन- बदिन फ़ायदा जान पड़ता है। भीतर की आँख और ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं और आगे का रास्ता दिखाई देने लगता है। गरज़ कि इस इस इल्म-लतायफ़ की बड़ाइयाँ और फ़ायदे तो बहुत हैं लेकिन यहाँ थोड़े से बयान किये गए हैं ।

चक्र विद्या और आत्मज्ञान

अब लतीफों, चक्रों, मुकामों और कमलों की असलियत का बयान है कि यह क्या हैं ? इनकी असलियत क्या है और क्यों कर बन गए हैं और उनके बन जाने की ज़रूरत क्यों हुई और किन-किन चीज़ों से बनाये गए ?

अगर इन सबकी ठीक-ठीक वजह मालूम करनी हो तो सब से पहले आत्मा और रूह की हकीकत मालूम होने की ज़रूरत है। बिना इसके कोई हकीकत मालूम नहीं हो सकती।

आत्मा की बाबत हर तरह जान लेने को इल्म हकायक (ब्रह्म विद्या) की ज़रूरत होती है। यह सबसे बड़ा और आखिरी इल्म है। इसको समझना और समझाना दोनों मुश्किल हैं। आत्मा को जान लेना, मालूम है कि, किस कदर मुश्किल है। इस आत्म-विद्या से तमाम उपनिषद भरे पड़े हैं और जिनकी व्याख्या और टीका करने में बड़े-बड़े मुनियों और ऋषिओं ने अपनी तमाम उमरें गवां दीं और फिर भी जैसा चाहिए वह न कह सके। शुरू ज़माने से अब तक इसी की बाबत लोग बहसों और बातचीत करते चले आये हैं और अब भी वही मैदान आगे है।

हिन्दुस्तान के मशहूर छः शास्त्रों में इसी को सिद्ध करने की कोशिश की गयी है। हर एक शास्त्र को बनाने वाले ने आत्मा को ही सिद्ध और साबित करने के लिए अपना-अपना अलहदा ढंग और सिद्धांत निकाला है और साबित किया है। पढ़े-लिखे हुए लोगों से यह बात छिपी नहीं है। सब ही जानते हैं। जितने अवतार और बड़े-बड़े लोग हो गुज़रे हैं सबने इनकी बाबत इशारा किया है। गरज़ यह है कि यह सबसे बड़ा आखिरी और निहायत मुश्किल मज़मून है। जब यही सिद्ध हो गया तो फिर रह क्या जाता है ? यह लिखा गया है कि आत्मा और रूह के इल्म के वगैर इल्म -लतायफ़ नहीं मालूम हो सकता।

रूह का इल्म बिना पथ और रास्ते के तय किये हुए नहीं समझ में आता। इसलिए ज़रूरी यही है कि पहले सलूक (पथ) से वाकफ़ियत हो। यानी अभ्यास किया जाना ज़रूरी है। बिना अभ्यास के मन और अक्ल (बुद्धि) ठीक-ठीक उस इल्म के जानने के काबिल नहीं बनती। तो पहले मन और बुद्धि का ठीक करना हुआ न कि पहले रूह के बाबत जानना। क्योंकि यह सिद्ध हो चुका है कि बिना योग के मन एकाग्र नहीं होता और न बुद्धि स्थिर होगी। इसलिए इसके उस्ताद लोग पहिले बिना समझाये हुए योग की क्रिया कराना शुरू करते हैं और ज्यों-ज्यों मन ठहरता जाता है और बुद्धि बारीक होती जाती है खुद-ब-खुद विवेक शक्ति पैदा होती जाती है और ज्ञान उभरता जाता है। सत्संग में उपासना, कर्म, ज्ञान साथ-साथ होते जाते हैं लेकिन शौकीन अभ्यासियों को ही कामयाबी होती है। जो शौकीन नहीं हैं उनको कुछ भेद नहीं खुलता अगर पहले से ही इल्म रूह का ज्ञान समझाया जाय और फिर मंज़िलों और रास्तों की कैफ़ियत बयान की जाय तो यह बिलकुल कहानियाँ हो जाती हैं।

लोग और अभ्यासी लोग ख्वामख्वाह वाचक ज्ञानी और झूठे अभिमानी बन जाते हैं। असलियत की तरफ़ उनका मन नहीं जाता और न फिर आगे जानने की कोशिश करते हैं। क्योंकि उनको तो यह वहम जम जाता है कि हम अब सब जान गए। बाज़-बाज़ लोग तो, ऐसा देखा गया है कि मुनकिर और नास्तिक हो गए। यही असल वजह है कि अहले इस्लाम में हज़रत पैगम्बर साहब ने, जो तमाम इल्मों के जानने वाले थे और असल भंडार थे, यह मुमानियत फ़रमाई है कि रूह और मंज़िलों का इल्म आम लोगों में शोहरत देने के काबिल नहीं है क्योंकि लोग गुमराह हो जायेंगे, और सीधे रास्ते पर जो कुछ चले हैं और चलेंगे उससे भी अलहद हो जायेंगे और गरूर में भर कर यह समझने लग जायेंगे कि अब हमको कुछ जानने की हाज़त नहीं है। जैसा कि तमाम उम्र तज़रबा मुझ फ़कीर को भी हुआ है। मेरे मुरशिद साहब का भी यही तरीका रहा है कि पहले अभ्यास मारामार करा दिया जाये फिर लतायफ़ का हाल और उनकी कैफ़ियत, जहाँ तक कि हम लोगों की अकल देखी, बयान कर दी। सत्संग के वक्त भी यही तरीका रहा कि पहले अभ्यास करा दिया और फिर उसकी असलियत बताकर रंग-रूप का नाम पता दे दिया। हम लोगों के हक़ में यही मुनासिब है कि पहले लग-लिपट कर बखूबी अभ्यास कर लें और फिर इसकी बाबत जैसा कि पिछले बरकों में बयान हो चुका है, कोशिश करें कि लतायफ़ का इल्म हासिल करें। चूँकि इस मामले में सुफ़ियों का इख़्तलाफ़ है और उनकी आदतों में यह बात दाखिल हो चुकी है कि जुबानी इल्म मंज़िलों और रास्तों का करते-कराते हैं चाहे वह मंज़िलों और रास्तों पर गए हों या न गए हों, इसलिए मैं भी यही मुनासिब समझता हूँ कि जहाँ तक बन सकेगा लतायफ़ के इल्म को बयान करने और दिखलाने की कोशिश करूँगा। मगर चूँकि इल्म लतायफ़ के बयान करने को इल्म रूह की ज़रूरत पड़ेगी और इल्म रूह के लिए इल्म सलूक की ज़रूरत होगी जिसमें कि तरीका अभ्यास और ज़िक्र, फ़िक्र व मराकबा (श्रवण, मनन और निदिध्यासन) वगैरा शामिल हैं, इसलिए पहिले मैं इल्मसलूक यानी पंथ और उसके तरीकेको बतलाने की हिम्मत बाँधता हूँ। परमात्मा मुझको और मेरी हिम्मत को मदद देवे और कोशिशों को कामयाब फ़रमाये। मुझे उम्मीद है कि इल्मसलूक के सिलसिले में सब बातें एक के बाद दूसरी और बारी-बारी पर अपने-अपने मौके पर आती जावेगी। जब जहाँ जैसी ज़रूरत होगी उस शाखा को ले लिया जावेगी यानी मौका देखकर कहीं इल्मसलूक और कहीं इल्मरूह और किसी जगह इल्मलतायफ़ का ज़िक्र इस तरह किया जावेगा कि उन सब का जोड़ मिलता हुआ चला जावे और लिखने और समझने में सिलसिला अनमिल बेजोड़ का न हो जाय।
